यदि शक्ति-सम्पन्न वर्ग के आदेशों का विरोध किया जायेगा तो शक्तिहीन वर्ग को अपार कष्ट उठाने पड़ सकते हैं।

5. उद्देश्यपरकता (Functional)—शक्ति का प्रयोग किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है। यदि शक्ति का प्रयोग उद्देश्यहीनता के लिए किया जायेगा तो वह व्यर्थ और निष्प्रभावी होगा। कार्ल ड्यूश ने शक्ति की सौद्देश्यता पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "शक्ति के बिना इच्छा प्रभावहीन है, परन्तु इच्छा के बिना शक्ति अनियमित, अक्रमबद्ध रूप में ही प्रभावशाली होती है। यदि कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है तो शक्ति वातावरण पर कुछ अक्रमबद्ध प्रभाव उत्पन्न करने से अधिक कुछ नहीं कर सकती। कुछ निर्णय होने अनिवार्य है जिनके द्वारा शक्ति के प्रयोग का नेतृत्व अथवा निर्देशन किया जाना चाहिए।"

6. वास्तविक शक्ति वाहक अस्पष्ट (Real Power Bearer is not Clear)—शक्ति का वाहक वास्तव में कौन है, कौन नहीं, यह बात स्पष्ट नहीं है क्योंकि कुछ लोग सामने रहते हैं और कुछ पर्दे के पीछे। संसदीय सरकार में कैबिनेट की तानाशाही कही जाती है, लेकिन वास्तव में उसके पीछे एक और शक्तिशाली वर्ग होता है जिसे नौकरशाही कहा जाता है। इसी प्रकार समाज में कुछ ऐसे शक्तिशाली लोग होते हैं जो सरकारी नीतियों, कानूनों, प्रशासनिक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। ये धन, धर्म, जाति, क्षेत्र या अन्य संकुचित धारणाओं, दबाव, समूहों, उच्च पदाधिकारियों में से हो सकते हैं।

7. दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करना (To Influence the Other's Behaviour)—फ्रेडरिक, शूमां, डहल, सैमुअल एच. बीयर, मैकाइवर इसका समर्थन करते हैं। **सैमुअल एच. बीयर** के शब्दों में, "एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर शक्ति का प्रयोग उस समय कर रहा होता है जब वह जान-बूझकर ऐसा व्यवहार करता है जिससे दूसरों के कार्य उस रूप में प्रभावित होते हैं, जिस रूप में वह चाहता है।"

मैकाइवर के अनुसार, "शक्ति के अस्तित्व से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों या वस्तुओं के व्यवहार को केन्द्रित, विनियमित या निर्देशित करने की योग्यता है।"

8. शक्ति बाहरी प्रभाव से सम्बन्धित होती है (Power is related with External Influence)—**फाइनर** के अनुसार, "शक्ति का भाव उन सभी बाहरी प्रभावों के प्रतिबिम्ब से है जिनके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी विशेष दिशा की ओर जाने के लिए मजबूर किया जा सके।" अर्थात् शक्ति का सम्बन्ध इस बात से है कि वह बाहरी क्रियाओं को प्रभावित कर सके।"

9. सापेक्षित स्वरूप (Relative Nature)—शक्ति सापेक्षित होती है, अर्थात् इसकी मात्रा का सम्बन्ध इसके स्रोतों पर आधारित होता है। यदि शक्ति के स्रोतों में परिवर्तन होता है तो शक्ति के स्वरूप में भी परिवर्तन हो सकता है और समय परिवर्तन के साथ-साथ भी शक्ति सम्बन्ध बदल जाते हैं; उदाहरणार्थ—भारत में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जो शक्तिशाली छवि आपातकाल तक रही, आपातकाल के पश्चात् उस छवि में परिवर्तन हो गया।

10. शक्ति अमूर्त होती है (Power is Abstract)—शक्ति का भौतिक स्वरूप नहीं होता है, अर्थात् उसे न देखा जा सकता है न छुआ जा सकता है बल्कि उसका अनुभव किया जा सकता है। वह एक भावना होती है जो अमूर्त होती है।

11. राजनीति में शक्ति की भूमिका (Role of Power in Politics)—राजनीति में शक्ति की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इसे राजनीतिक शरीर को चिकनाई देने वाला तत्त्व कहा जा सकता है। यह एक ऐसा चुम्बक है जो राजनीति में साहचर्य और स्थायित्व प्रदान करता है। लासवेल, मॉर्गेन्थो, ओडगार्ड, डहल, फ्रेडरिक जैसे अनेक आधुनिक विचारकों ने शक्ति और प्रभाव को राजनीति का केन्द्र-बिन्दु माना है। **हैराल्ड लासवेल** का मत है कि, "जब हम राजनीति के शास्त्र की बात कहते हैं तो उससे हमारा आशय है—शक्ति का अर्थशास्त्र।"

शक्ति के स्रोत
[SOURCES OF POWER]

शक्ति के अनेक स्रोत होते हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

1. संगठन—संगठन शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। संगठन स्वयं में एक बड़ी शक्ति है। जब लोग संगठित हो जाते हैं और अनुशासन में रहकर कार्य करते हैं तो उनकी शक्ति में कई गुना वृद्धि हो जाती है।

Scanned with CamScanner

लोकतन्त्रीय राज्यों में राजनीतिक दलों का संगठन शक्ति प्राप्ति के लिए ही किया जाता है। संगठिल दलों के नेता बड़े शक्तिशाली होते हैं। इसी प्रकार श्रमिक संघ, व्यापारिक संघ, कर्मचारी संघ, युवा संघ, धार्मिक संघ काफी शक्तिशाली होते हैं। संगठन के माध्यम से व्यक्ति सत्ता को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं और संगठन शक्ति के कारण सत्ता पर सीधा प्रभाव रखते हैं। उदाहरणतः श्रीमती इन्दिरा गांधी के सत्ता में वापस आने के लिए एक ऐसे संगठन की आवश्यकता थी जिसके शिखर पर वह स्वयं विराजमान हों।

2. ज्ञान—मानवीय क्षेत्र में शक्ति का पृथक् स्रोत ज्ञान है। ज्ञान के माध्यम से मनुष्य अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की क्षमता अर्जित करता है। ज्ञान से मनुष्य केवल भौतिक वस्तुओं को ही नियन्त्रित नहीं करता है, अपितु वह नये लक्ष्यों और अवसरों को भी अर्जित कर सकता है। इसके द्वारा मनुष्य अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ता है। ज्ञान के आधार पर बाह्य शक्तियाँ अर्जित करना ज्ञान का बाह्य पक्ष है। इसी प्रकार आत्मिक शक्ति प्राप्त करना ज्ञान का आन्तरिक पक्ष है। **टैनिसन** ने इस सम्बन्ध में लिखा है, "आत्मसम्मान, आत्मज्ञान और आत्मनियन्त्रण—केवल यह तीन ही जीवन को सम्प्रभु शक्ति की ओर संचालित कर सकते हैं। इस प्रकार ज्ञान के द्वारा मनुष्य शक्ति अर्जित करता है।"

3. बाह्य साधन—ज्ञान शक्ति का आन्तरिक साधन है। इसके अतिरिक्त शक्ति के बाह्य साधन भी हैं जो मनुष्यों को शक्तिशाली बनाते हैं। इसके अन्तर्गत भौतिक सम्पन्नता, व्यक्ति की सामाजिक स्थिति आदि आते हैं। प्रजातन्त्र में बाह्य और आन्तरिक दोनों शक्तियों में परस्पर मेल रहता है। एक शक्ति के आधार पर दूसरी शक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु कुलीनतन्त्रात्मक समाज में यह सम्भव नहीं है क्योंकि वहाँ पर शक्ति का निर्धारण जन्म और सामाजिक स्थिति पर निर्भर रहता है। फिर भी किसी पर स्वामित्व मनुष्य की शक्ति के बढ़ने में योग देता है। शक्ति के बाह्य साधन निम्नलिखित हैं—

(a) निपुणता—शक्ति का निर्माणक तत्त्व शक्ति प्रयोग करने की निपुणता है। दो व्यक्तियों के पास एक जैसे साधन होते हुए भी उनकी शक्ति प्रयोग की क्षमता में पर्याप्त अन्तर हो सकता है। समान सामाजिक या राजनीतिक स्तर के व्यक्तियों की शक्ति एक-दूसरे से भिन्न हो सकती है। कारण यह है कि एक व्यक्ति में अपने साधनों का प्रयोग करने की निपुणता अधिक होती है और दूसरे में कम। मैकियावली ने राजनीतिक निपुणता को विशेष महत्त्व दिया है। राजनीतिक निपुणता में अन्तर होने के कारण दो सत्ताधारियों की शक्ति में महान् अन्तर हो सकता है। अधिक या कम राजनीतिक निपुणता के कारण दो राष्ट्रपतियों या प्रधानमन्त्रियों की प्रभावकारिता में अन्तर हो सकता है।

(b) संसाधन—शक्ति का एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्रोत धन है। धनी व्यक्ति साधन-सम्पन्न होता है। वह सत्ता की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त कर सकता है। वह धन के सहारे उच्च पदस्थ अधिकारियों को खरीद सकता है। वह जन-संचार के माध्यमों पर अपना प्रभाव स्थापित कर सकता है। पूँजीवादी देशों में तो राजनीतिक शक्ति अर्जित करने के लिए बहुत धन व्यय करना पड़ता है। साधन सम्पन्न व्यक्ति ही चुनाव लड़ सकते हैं और उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए अपार धनराशि खर्च कर सकते हैं। इसलिए शक्ति के आकांक्षी व्यक्ति भी लालसा में धन प्राप्ति की दौड़ में सम्मिलित हो जाते हैं। **रॉबर्ट डहल** के शब्दों में, "अन्य पदार्थ समान होने पर यह आशा करना उचित है कि अधिक साधनसम्पन्न व्यक्ति अधिक शक्ति अर्जित कर लेगा।"

(c) विश्वास—शक्ति का एक अन्य स्रोत विश्वास है। किसी व्यक्ति, संगठन, व्यवस्था या शासक के प्रति लोगों का विश्वास उसकी प्रभावित करने की क्षमता को बढ़ा देता है। प्राचीन काल में राजाओं के दैवीय अधिकारों में लोगों का विश्वास उनकी शक्ति का आधार था। आधुनिक काल में सरकार के संगठन, कार्यों और नीतियों के प्रति लोगों का व्यापक विश्वास उनकी शक्ति का आधार माना जाता है। विश्वास के कारण सत्ताधारी को बल प्रयोग की आवश्यकता नहीं रहती और वह बहुत थोड़े राजनीतिक साधनों से अपना कार्य सम्पन्न कर सकता है। कोई भी संस्था या संगठन तब तक ही प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है जब तक लोगों का उसके प्रति विश्वास बना रहता है। राजनेता मतदाताओं का विश्वास प्राप्त करने पर ही शक्ति के शिखर पर पहुँच सकते हैं।

(d) व्यक्तित्व—व्यक्ति की शक्ति का अन्य स्रोत उसका व्यक्तित्व है। व्यक्ति की बुद्धिमत्ता, चातुर्य, साहस, भाषण-शैली, संगठन, कौशल, शीघ्र और सही निर्णय लेने की क्षमता उसके व्यक्तित्व को उभारती है और अन्य लोगों को उसकी ओर आकर्षित करती है। बहुत-से व्यक्ति राजनेताओं के चमत्कारी व्यक्तित्व

Scanned with CamScanner

(charismatic personality) के कारण उनके अनुयायी बन जाते हैं। भारत में तो नैतिक बल को विशेष महत्त्व दिया जाता है। महात्मा गांधी सत्ता में न होते हुए भी जन-साधारण को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे क्योंकि उनमें असीमित नैतिक बल था।

(e) जन-संचार के साधन—लोकतन्त्र में जन-संचार के साधन का बहुत महत्त्व है। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन जैसे जन-संचार के साधन लोकमत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उम्मीदवारों के द्वारा चुनाव के समय जन-संचार के साधनों द्वारा जनता के मन को प्रभावित करने का प्रयत्न किया जाता है। इसीलिए जन-संचार के साधनों पर नियन्त्रण रखने वाले व्यक्ति काफी प्रभावशाली बन जाते हैं। बड़े-बड़े समाचार-पत्र व पत्रिकाओं के मालिकों और सम्पादकों के पास शक्ति का पर्याप्त भण्डार होता है। जन-संचार के साधनों द्वारा व्यक्ति सत्ता में आने का प्रयास करते हैं।

(f) सत्ता—आधुनिक युग में सत्ता शक्ति का प्रमुख स्रोत है। शक्ति के आकांक्षी सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं और सत्ता प्राप्त करने के पश्चात् उसे बनाये रखने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। वे जानते हैं कि जिस क्षण वे सत्ता में नहीं रहेंगे, उसी क्षण वे शक्तिविहीन हो जायेंगे। सत्ता की अनेक सीढ़ियाँ होती हैं। प्रत्येक सीढ़ी पर सजे पदों की शक्ति पृथक्-पृथक् होती है। सत्ताधारी व्यक्तियों की शक्ति उनके पद पर निर्भर करती है। जिलाधीश की तुलना में गृहसचिव की शक्ति अधिक होती है।

(g) आकार—केवल आकार को शक्ति का आधार मानना आवश्यक नहीं है। अनेक बार आकार उसके लिए अभिशाप बन जाता है। बड़ा आकार उसे शक्तिशाली सिद्ध करने की अपेक्षा असन्तुलित बनाकर निर्बल सिद्ध कर देता है। **मैकाइवर** ने लिखा है, "शक्ति की कार्य-कुशलता उन विभिन्न परिस्थितियों के द्वारा बढ़ती या कम होती रहती है जिनके अधीन उसे कार्य करना है।"

(h) बल प्रयोग—बल का प्रयोग भी शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। बल प्रयोग के द्वारा प्रतिद्वन्द्वियों का सामना किया जा सकता है। शक्ति बल प्रयोग की क्षमता है। बल प्रयोग तथा दमन का अर्थ सभी स्थानों पर अथवा समस्त व्यवस्थाओं में एक समान न होकर भिन्न-भिन्न होता है। यह भिन्नता व्यक्ति, समाज व संस्कृति में भिन्नता आ जाने पर स्वतः ही उत्पन्न हो जाती है। **अब्राहीम कैप्लान** ने शक्ति के अन्तर्गत नियन्त्रण के तत्त्व को स्वीकार किया है क्योंकि शक्ति में सदैव अनुशक्ति की भावना रहती है जिसे हम 'बल-प्रयोग का तत्त्व' कह सकते हैं।

(i) शस्त्रों पर एकाधिकार—शक्ति के द्वारा जहाँ प्रभाव की स्थापना होती है, वहीं यह भय का भी सृजन करती है। भय भी शक्ति की स्थायित्वता तथा संचालन के लिए महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। यह भय शस्त्रों पर एकाधिकार स्थापित करके उत्पन्न किया जा सकता है। एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के ऊपर नियन्त्रण इसलिए स्थापित कर लेता है क्योंकि उसके पास शस्त्रास्त्र ऐसे हैं जिनसे लोग भयभीत हो जाते हैं।

(j) प्रेम का प्रभाव—शक्ति को, दबाव का यन्त्र माना गया है परन्तु शक्ति की अभिव्यक्ति सदैव केवल बल के माध्यम से ही नहीं होती, वरन् प्रेम के प्रभाव के प्रदर्शन से भी इसकी अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शक्ति के अनेक स्रोत तथा पद्धतियाँ (Techniques) अथवा साधन हैं जिनके द्वारा शक्ति को अर्जित किया जा सकता है तथा उसे बनाये रखा जा सकता है। समय, परिस्थिति तथा देशकाल के अनुरूप समय-समय पर ये साधन बदलते रहते हैं परन्तु व्यक्ति का ज्ञान, व्यक्तित्व, निपुणता, कौशल आदि ऐसे साधन हैं जो सदैव शक्ति की संरचना को प्रभावित करते रहते हैं। विश्वास, प्रेम तथा प्रभाव इसके स्थायी, उचित, विवेकपूर्ण तथा तर्कसंगत साधन हैं।

शक्ति के प्रकार
[KINDS OF POWER]

शक्ति की अवधारणा तथा प्रकारों के सम्बन्ध में विद्वानों के विचारों में एकमत का अभाव है। प्रत्येक विद्वान ने अपने-अपने ढंग से शक्ति के प्रकारों का वर्णन किया है। शक्ति का प्रमुख वर्गीकरण निम्न आधारों पर हो सकता है—

1. हिन्दू धर्म के ग्रन्थों के आधार पर (On the Basis of the Hindu Religious Books)—हिन्दू धर्म के प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार शक्ति के दो अग्रांकित प्रकार हैं—

Scanned with CamScanner

(i) **दैवी शक्ति** (Divine Power)—जब शक्ति का प्रयोग मानव के हित के लिए धार्मिक नियमों के अनुसार हो, उसे दैवी शक्ति कहते हैं।

(ii) **पाशविक शक्ति** (Physical Power)—जब शक्ति का प्रयोग अधर्म के लिए किया जाये तो वह पाशविक शक्ति है। इसके प्रयोग से मानवीय हितों को हानि पहुँचती है।

2. बीअर का वर्गीकरण (Bear's Classification)—बीअर के मतानुसार शक्ति के सात प्रकार हैं—(i) सम्पत्ति (Wealth), (ii) भौतिक बल (Physical Power), (iii) सामाजिक स्तर (Social Status), (iv) शिक्षा (Education), (v) नैतिक चरित्र (Moral Character), (vi) व्यक्तित्व का आकर्षण (Personal Magnetism) तथा (vii) प्रबन्ध कला (Managerial Skill)।

3. डहल का वर्गीकरण (Dahl's Classification)—रॉबर्ट ए, डहल के शक्ति के दो रूप हैं—

(i) **उत्पीड़न** (Coercion)—जो शक्ति वैधानिकता पर आधारित न हो, उत्पीड़न कहलाती है।

(ii) **सत्ता** (Authority)—जो शक्ति वैधानिकता पर आधारित हो, उसे सत्ता कहते हैं।

4. मैक्स वेबर के अनुसार शक्ति के तीन रूप हैं—

(i) कानून या वैधानिक, (ii) परम्परागत, (iii) करिश्मावादी।

5. एडवर्ड शिल्स का वर्गीकरण—(i) व्यवहार परिवर्तन के आधार पर शक्ति के तीन रूप हैं—(अ) बल, (ब) प्रभुत्व और (स) छल योजना।

(ii) औचित्यपूर्णता के आधार पर।

(2) Short Notes

बायर्सटेड का शक्ति का वर्गीकरण
[BIERSTEDT'S CLASSIFICATION OF POWER]

(a) **दृश्यता के आधार पर** (On the Basis of Sight)—अज्ञात तथा प्रकट शक्ति, यदि शक्ति अज्ञात तथा अदृश्य हो तो उसे प्रच्छन्न (Latent) शक्ति कहते हैं। इसके प्रकट होने पर सत्ता व बल इत्यादि रूप होते हैं।

(b) **दमन की दृष्टि के आधार पर** (On the Basis of Coercion)—अदमनात्मक तथा दमनात्मक। अदमनात्मक शक्ति प्रभाव को कहते हैं और दमनात्मक शक्ति में बल आ जाता है।

(c) **औपचारिकता के आधार पर** (On the Basis of Formality)—औपचारिक तथा अनौपचारिक। औपचारिक (Formal) शक्ति कानून या संविधान के आधार पर अधिकारियों के पास होती है तथा अनौपचारिक (Informal) शक्ति वास्तविक होती है जो विभिन्न व्यक्तियों या समूहों में होती है।

(d) **शक्ति प्रवाह के आधार पर** (On the Basis of Flow of Power)—एकपक्षीय (Unilateral), द्विपक्षीय (Bilateral) तथा बहुपक्षीय (Multilateral)। एकपक्षीय शक्ति में ऊपर के अधिकारियों द्वारा नीचे के अधिकारियों को आज्ञा दी जाती है; जैसे—सेना या पुलिस में। द्विपक्षीय या बहुपक्षीय शक्तियों को सौदागरी (Bargaining) शक्तियाँ भी कहा जाता है। इन शक्तियों में दोनों पक्ष एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं।

(e) **केन्द्रीकरण के आधार पर** (On the Basis of Centralization)—केन्द्रित (Centralized) तथा विकेन्द्रित (Decentralized)। संकेन्द्रित (Concentrated or Centralized) शक्ति में सारी शक्तियाँ केन्द्र के पास होती हैं और अधीनस्थ संस्थाएँ केन्द्रीय शक्ति पर निर्भर करती हैं। इसके विपरीत विकेन्द्रित शक्तियाँ विभिन्न संस्थाओं तथा निकायों में बँटी हुई होती हैं। विकेन्द्रित शक्ति अस्पष्ट तथा प्रसुप्त होती है; जैसे—जन-शक्ति।

(f) **क्षेत्रीयता के आधार पर** (On the Regional Basis)—अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा स्थानीय। सारे विश्व से सम्बन्धित शक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति (International Power), एक राष्ट्र से सम्बन्धित शक्ति को राष्ट्रीय शक्ति (National Power) तथा एक क्षेत्र या स्थान से सम्बन्धित शक्ति को स्थानीय शक्ति (Regional Power) के नाम से पुकारते हैं।

Scanned with CamScanner

(g) **शक्ति की मात्रा एवं प्रभाव की दृष्टि के आधार पर** (On the Basis of Quantity and Influence of Power)—इस आधार पर राष्ट्र को महान् (Super), मध्यम (Middle) तथा निम्न (Weak) शक्ति के नाम से पुकारा जाता है।

(h) **प्रयोग व परिणाम के आधार पर** (On the Basis of Use and Results)—इच्छित (Intended) अथवा अइच्छित (Unintended) शक्ति के दो प्रकार के प्रयोग व परिणाम होते हैं।

शक्ति के अन्य प्रकार
[OTHER KINDS OF POWER]

शक्ति के अन्य प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. **आर्थिक शक्ति**—राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करने वाली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शक्ति आर्थिक शक्ति है। यह शक्ति धन की है। जिन लोगों के पास आर्थिक शक्ति होती है उनका राजनीतिक शक्ति पर नियन्त्रण हो जाता है। जो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं वे राजनीतिक शक्ति अर्जित करने में सफल हो जाते हैं। पूँजीवादी देशों में तो यह बात विशेष तौर पर लागू होती है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी आर्थिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्रों को प्रभावित करने की सर्वोच्च स्थिति में होता है।

2. **राजनीतिक शक्ति**—राजनीतिक शक्ति अन्तिम विश्लेषण में सरकार की शक्ति है। इस शक्ति के बल पर सरकार अपने अधिकार क्षेत्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों और उनके द्वारा बनाये गये विभिन्न समुदायों और संघों से अपने आदेशों का पालन कराती है। राजनीतिक शक्ति अन्य प्रकार की शक्तियों में सर्वोच्च होती है। परन्तु यह बात स्मरणीय है कि राजनीतिक शक्ति के पीछे अनेक प्रकार की बाध्यकारी शक्तियों का दबाव और प्रभाव होता है तथा राजनीतिक शक्ति की प्रकृति और मात्रा अन्य शक्तियों पर निर्भर करती है।

3. **सैन्य शक्ति**—आधुनिक युग में सैन्य शक्ति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। लोकतन्त्रीय राज्यों में तो सैन्य शक्ति सरकार की सत्ता को प्रभावकारी बनाने वाला यन्त्र है। सैनिक शक्ति की सहायता से राज्य की विदेशी आक्रमणों से रक्षा की जाती है और राष्ट्रीय सीमाओं को सुरक्षित रखा जाता है। अनेक देशों में सैनिक तानाशाहियाँ कार्य कर रही हैं। इन देशों में राजनीतिक शक्ति सेनाध्यक्षों के हाथों में है और उन्हीं के आदेशों के अनुरूप शासन संचालित किया जाता है। वर्तमान में **पाकिस्तान** तथा **म्यांमार** (बर्मा) में सैनिक सरकारें अस्तित्व में हैं। समय-समय पर पाकिस्तान, म्यांमार, बंगलादेश, क्यूबा और अन्य अनेक राज्यों में सैनिक सरकारों की स्थापना हो चुकी है तथा उन्होंने सैनिक शक्ति के आधार पर शासन भी किया है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी सैनिक शक्ति एक प्रभावकारी साधन है। जो राष्ट्र सैनिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली हैं, वे अन्य राष्ट्रों को अधीनस्थ की स्थिति में रखते हैं।

4. **राष्ट्रीय शक्ति**—आधुनिक विश्व-राजनीति में राष्ट्रीय शक्ति की धारणा को प्रमुख स्थान प्राप्त है। इस शक्ति के आधार पर एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है और अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करता है। राष्ट्रीय शक्ति एक सामूहिक शक्ति है जो किसी राष्ट्र की राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक शक्ति से बनती है। राष्ट्रीय शक्ति को निर्धारित करने वाले कई तत्त्व हैं। इनमें देश की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक साधन, जनसंख्या और उसके गुण, वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति, यातायात और संचार के साधनों का विकास, अर्थव्यवस्था और शासन-प्रणाली का स्वरूप आदि अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं।

5. **धार्मिक शक्ति**—प्राचीन राज्यों में धार्मिक शक्ति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था तथा आज भी कई राज्यों में धार्मिक शक्ति एक प्रभावकारी तत्त्व है। प्राचीन राज्यों में धर्म और राजनीति में अन्तर नहीं किया जाता था। राज्य के सभी कार्य किसी विशेष धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार ही होते थे। राजा लोगों का धार्मिक गुरु होता था तथा धार्मिक नियमों का पालन कानूनों की भाँति होता था। कई आधुनिक राज्यों में भी धार्मिक शक्ति का राजनीति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ईरान, इराक, पाकिस्तान, नेपाल आदि राज्यों में धार्मिक शक्ति का राजनीति पर गहरा प्रभाव है।

Scanned with CamScanner

हॉब्स तथा सिगमण्ड फ्रायड के साथ सहमति प्रकट की है कि शक्ति की कामना जन्मजात है। उसने शक्ति के मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का अन्वेषण किया है। शक्ति, विचार या इच्छा से उत्पन्न होकर, उसकी पूर्ति के लिए संकल्प बनती है। यही स्थिति शक्ति की माँग अर्थात् अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की स्वतन्त्रता के रूप में अभिव्यक्त होती है। **डहल** ने भी शक्ति को स्वयं अपने आप में एक लक्ष्य माना है। प्रायः मनुष्य अपना प्रभाव बनाने के लिए राज्य के ऊपर नियन्त्रण करने का प्रयास करते हैं ताकि उनको अपनी इच्छाओं को कार्यान्वित कराने के लिए भौतिक दमन का एकाधिकार प्राप्त हो जाये। **बायरस्टेड** ने शक्ति को समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं एवं अन्तःक्रियाओं में अन्तर्निहित माना है। उसके अनुसार, शक्ति सदैव प्रच्छन्न रहती है और कभी भी प्रकट नहीं होती। उसके प्रकट रूप बल (force) तथा सत्ता (authority) हैं। यह एक समाजशास्त्रीय और सम्बन्धात्मक विचार है। व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में विभिन्न तत्त्व, परिस्थितियाँ, साधन आदि होते हैं। शक्ति के उद्देश्य या उपयोग रचनात्मक अथवा ध्वंसात्मक हो सकते हैं। शक्ति सत्ता की तरह सहसा प्रकट होती अथवा क्रमशः एक व्यक्ति या समूह से दूसरे व्यक्ति या समूह के पास आती-जाती रहती है। यह विसृत (diffuse) या संकेन्द्रित (concentrated) हो सकती है। शक्ति के प्रयोग में पुरस्कार एवं दण्ड, या दोनों, अथवा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ स्वीकार करना या रोके रखना, पद और प्रस्थिति (status) के चिह्न आदि रूप अन्तर्ग्रस्त होते हैं। शक्ति के पीछे शास्तियाँ (sanctions) होती हैं। ये शास्तियाँ बल प्रयोग से सम्बन्ध रखती हैं। बल-प्रयोग या दमन का अर्थ, व्यक्ति और व्यक्ति, समाज और समाज तथा संस्कृति और संस्कृति में अलग-अलग होता है। **कैटलिन** ने समस्त राजनीति को स्वभावतः शक्ति-राजनीति कहा है। **लासवेल** ने शक्ति को एक महत्त्वपूर्ण मूल्य माना है। शक्ति सबके पास समान रूप से नहीं पायी जाती। इसके लक्ष्य भी अलग-अलग हो सकते हैं। **सुकरात, प्लेटो** आदि शक्ति का ध्येय सामूहिक हित मानते थे किन्तु यथार्थवादी विचारकों ने उसे स्वाहित के प्रयासों के रूप में देखा है। मनोविश्लेषणवादी **लासवेल** ने **फ्रायड** की विचारधारा से प्रभावित होकर शक्ति को अवचेतन प्रेरणाओं का परिणाम बताया है। संक्षेप में, शक्ति—(i) प्रतिरोध करने पर भी सफल, (ii) सम्बन्धात्मक, (iii) लक्ष्य युक्त, (iv) स्थिति सम्बन्ध, (v) विविधरूपा, (vi) सर्वत्र पायी जाने वाली, तथा (vii) शास्तियों समेत मानवीय क्षमता का नाम है।

संकुचित दृष्टिकोण

व्यापक दृष्टिकोण से शक्ति एक सर्वत्र पाया जाने वाला मानवीय सम्बन्ध है। उसमें शक्ति के सभी रूप शामिल हो जाते हैं किन्तु संकुचित एवं प्रचलित दृष्टिकोण के अनुसार, शक्ति मूलतः बल-प्रयोगात्मक एवं कठोर शास्तियों से युक्त होती है। इसी कारण उसे कभी-कभी हिंसा, भय, आतंक, दमन आदि का पर्याय माना जाता है। इस प्रचलित धारणा के कारण यहाँ शक्ति के प्रभाव को, शक्ति का ही एक प्रकट रूप होते हुए भी पृथक् रखना आवश्यक माना गया है।

शक्ति प्रयोग करने के ढंग
[METHODS OF EXERCISING POWER]

शक्ति के प्रयोग करने के ढंग निम्नलिखित हैं—

1. अनुनय (Persuation)—शक्ति प्रयोग का एक अच्छा ढंग है। यह ढंग सरल एवं शान्तिपूर्ण है। इसमें दमनात्मक शक्ति का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि एक वर्ग दूसरे वर्ग को शान्तिपूर्ण तरीके से तर्क देकर अपनी बात मनवा लेता है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस शक्ति का प्रयोग शक्तिशाली राष्ट्र बहुत करते हैं। उनके द्वारा दूसरे राष्ट्र को समझाकर उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों को रोकना होता है, जो पहले राष्ट्र के हित में नहीं है।

2. पुरस्कार (Reward)—यह भी शक्ति प्रयोग का शान्तिपूर्ण ढंग है। पुरस्कार के माध्यम से एक व्यक्ति अथवा राष्ट्र के व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। पुरस्कार के चार प्रकार होते हैं—

(i) **मनोवैज्ञानिक** (Psychological)—यदि एक राष्ट्र अपनी नीतियों का विवेचन इस प्रकार करे कि दूसरे राष्ट्र की मनोवैज्ञानिक ढंग से सन्तुष्टि हो जाये और दूसरा राष्ट्र समझने लगे कि पहले राष्ट्र की नीतियाँ विश्व हित में हैं।

Scanned with CamScan

(ii) **भौतिक** (Physical)—पुरस्कार भौतिक रूप में हो सकते हैं; जैसे—यदि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की नीतियों में इस प्रकार परिवर्तन करने में सफल हो जाये कि उसकी भौतिक उपलब्धियों (क्षेत्रफल, सैनिक, तकनीकी प्रशिक्षण आदि की प्राप्तियों) में वृद्धि हो सके; जैसे—अमरीका एवं चीन, पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध लड़ाने के लिए सहायता देते रहे हैं।

(iii) **आर्थिक** (Economical)—आर्थिक सहायता देकर भी देश की नीतियों में परिवर्तन किया जाता है; जैसे—अमरीका और रूस छोटे या निर्धन तथा पिछड़े राष्ट्रों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें अपने खेमे में रखना चाहते रहे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने पक्ष में उनका समर्थन जुटाना चाहते रहे हैं।

(iv) **राजनीतिक पुरस्कार** (Political Reward)—जब एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की नीतियों का समर्थन करके उसकी आवाज को बुलन्द करे और उसे सही सिद्ध करने का प्रयास करे।

3. दण्ड (Punishment)—शक्ति के प्रयोग का एक ढंग दण्ड भी है। दण्ड के माध्यम से राज्य अपने कानूनों, आज्ञाओं, नियमों का पालन अपनी जनता से कराता है। दण्ड देने की कुछ विधि निम्न प्रकार है—पुरस्कार रोकना, दण्ड की धमकी देना, दण्ड का प्रयोग करना आदि। यह प्रक्रिया एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के प्रति भी अपनाता है।

4. बल का प्रयोग (Use of Force)—शक्ति के प्रयोग का एक ढंग बल प्रयोग है। यदि निर्बल राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्र की इच्छानुसार आचरण न करे तो शक्तिशाली राष्ट्र निर्बल राष्ट्र के प्रति बल प्रयोग कर सकता है और सैनिक कार्यवाही करके उसे अपनी बात मनवाने के लिए विवश कर सकता है। रूस ने 1956 में हंगरी और 1968 में चेकोस्लोवाकिया में सशस्त्र हस्तक्षेप इसलिए किया क्योंकि वहाँ किये गये सुधार समाजवाद के विरुद्ध थे। राष्ट्र अपने नागरिकों के प्रति भी इसका प्रयोग कैद, सजा, दण्ड, फाँसी, पिटाई आदि के माध्यम से करता है।

5. प्रभुत्व (Dominance)—इस आधार को पद सोपान प्रणाली में पाया जा सकता है, वहाँ उच्च-पदाधिकारी निम्न पदाधिकारी से अपनी बात इसलिए मनवा लेता है क्योंकि वह उच्चशक्ति-सम्पन्न होता है।

6. क्रिया कौशल (Manipulation)—इस ढंग से शक्ति के प्रयोग के उद्देश्यों को गुप्त रखते हुए दूसरे मनुष्य के व्यवहार को बदलने का प्रयास किया जाता है; जैसे—यदि किसी फैक्ट्री के मजदूर हड़ताल करने की सूचना दें तो मैनेजर उनके नेता को इस प्रकार से प्रभावित करे कि मजदूर बिना अपनी माँगें पूरी कराये हड़ताल पर न जाकर कार्य करते रहें।

Scanned with CamScanner